

श्रीः

श्रीमते निगमान्त महादेशिकाय नमः  
श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।  
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

आण्डाळ् अरुळिच्चैय्द  
॥ वारणमायिरम् ॥

*This document\* has been prepared by*

***Sunder Kidambi***

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam*

---

\*This was typeset using skt, L<sup>A</sup>T<sub>E</sub>X, Itrans, skt and the xdvng font.

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
॥ वारणमायिरम् ॥

मायवन् तन्नै मणञ्जैय्य क्कण्ड तूयनर् कनैवै तोळि क्कुरैत्तल्

‡वारणम् आयिरम्\* शूळ वलञ्जैय्यु\*  
नारण नम्बि\* नडक्किन्ऱान् एन्ऱैदिर\*  
पूरण पौरकुडम्\* वैत्तु प्पुरम् एङ्गुम्\*  
तोरणम् नाट्ट\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ १ ॥

नाळै वदुवै\* मणम् एन्ऱु नाळ् इट्टु\*  
पाळै कमुगु\* परिशुडै प्पन्दर् कीळ\*  
कोळरि मादवन्\* कोविन्दन् एन्वान् ओर्\*  
काळै पुगुद\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ २ ॥

इन्दिरन् उळ्ळिट्टु\* तेवर् कुळाम् एल्लाम्\*  
वन्दिरुन्दैन्नै\* मगळ् पेशि मन्दिरित्तु\*  
मन्दिर क्कोडि उडुत्ति\* मण मालै\*  
अन्दरि शूट्टु\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ ३ ॥

**Attention:** New letters have been introduced to facilitate reading Tamil texts in Devanaagarii. Distinction has been made between certain short and long consonants that do not exist in Devanaagarii. For e.g., नै and ने should be treated with the same distinction as that exists between नि and नी. The letters ए and ए, and औ and औ, should be treated in the same way. The letter ळ denotes the za in Tamil. For e.g., aazvaar would be written as आळ्वार् in Devanaagarii. There is a subtle difference between र and र, however, they can be pronounced in the same way. Also note that ढ्र sounds almost like ढ्र, ढ्रि like ढ्रि, and so on. The consonant-cluster न्र is pronounced somewhere between न्र and न्र. It is, however, colloquially acceptable to pronounce the clusters ढ्र and न्र as त्त and न्न, respectively.

नाल् तिशै तीरुत्तम् कौणरन्दु\* ननि नल्लि\*  
 पारप्पन च्चिट्टरगळ्\* पल्लार् एडुत्तेत्ति\*  
 पू प्पुनै कण्णि\* प्पुनिदनोडैन् तन्नै\*  
 काप्पु नाण् कट्ट\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ ४ ॥

कदिर् ओळि तीपम्\* कलशम् उडन् एन्दि\*  
 शदिर् इळ मङ्गैयर् ताम्\* वन्दैदिर् कौळ्ळ\*  
 मदुरैयार् मन्नन्\* अडि निलै तौट्टैङ्गुम्\*  
 अदिर प्पुगुद\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ ५ ॥

मत्तळम् कौट्ट\* वरि शङ्गम् निन्ऱुद\*  
 मुत्तुडै तामम्\* निरै ताळन्द पन्दर् कीळ्\*  
 मैत्तुनन् नम्बि\* मदुशूदन् वन्दैन्नै\*  
 क्कैत्तलम् पट्ट\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ ६ ॥

वाय् नल्लार्\* नल्ल मरै ओदि मन्दिरत्ताल्\*  
 पाशिलै नाणल् पडुत्तु\* प्परिदि वैत्तु\*  
 काय् शिन मा कळिरन्नान्\* एन् कै प्पट्टि\*  
 ती वलञ्जैय्य\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ ७ ॥

इम्मैक्कुम्\* एळ्ळै पिरविक्कुम् पट्टावान्\*  
 नम्मै उडैयवन्\* नारायणन् नम्बि\*  
 शैम्मै उडैय\* तिरु क्कैयाल् ताळ् पट्टि\*  
 अम्मि मिदिक्क\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ ८ ॥

वरि शिलै वाळ् मुगत्तु\* एन् ऐमार् ताम् वन्दिट्टु\*  
 एरि मुगम् पारित्तु\* एन्नै मुन्ने निरुत्ति\*  
 अरि मुगन् अच्चुदन्\* कैम्मैल् एन् कै वैत्तु\*  
 पौरि मुगन्दट्ट\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ ९ ॥

कुड्कुमम् अप्पि\* क्कुळिर् शान्दम् मट्टित्तु\*  
 मङ्गल वीदि\* वलञ्जैय्यु मण नीर्\*

अङ्गवनोडुम्\* उडन् शेन्ऱङ्गानै मेल्\*  
मञ्जनम् आट्ट\* क्कना क्कण्डेन् तोळी ! नान् ॥ १० ॥

‡आयनु क्काग\* त्तान् कण्ड क्कनाविनै\*  
वेयर् पुगळ्\* विल्लि पुत्तूर् क्कोन् कोदै शौल्\*  
तूय तमिळ् मालै\* ईर् ऐन्दुम् वल्लवर्\*  
वायुनन् मक्कळै पैट्टु\* मगिळ्वरे ॥ ११ ॥

॥ आण्डाळ् तिरुवडिगळे शरणं ॥